IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, June 2023

भारत के आर्थिक विकास में जनजातियों की भूमिका (सीधी जिले के विशेष सन्दर्भ में)

Dr. Madhulika Shrivastava[1] and Preeti Satyanami[2]
Professor, Department of Sociology[1]
Research Scholar, Department of Sociology[2]
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, Madhya Pradesh, India

सारांश:- जनजाति समाज आज भी आधुनिक चमक दमक से अपने आप को बचाए हुए हैं। इसके विपरीत शहरों में रहने वाला समाज समय-समय पर भारतीय परम्पराओ में अपनी सुविधानुसार परिवर्तन करता रहता है। जनजाति समाज आज भी भारतीय संस्कृति का वाहक माना जाता है, क्योकि यह समाज सनातन हिन्दू संस्कृति का पूरे अनुशासन के साथ पालन करता पाया जाता है। जनजाति उस सामाजिक समुदाय को कहा जाता है,जो राज्य के विकास के पहले अस्तित्व में था, लेकिन वह राज्य के बाहर निवास करता था। भारत के संविधान में "अनुसूचित जनजाति" शब्द का प्रयोग हुआ है, इसलिएइनके लिए विशेष प्रावधान लागू किये गए हैं । जनजाति भारत के आदिवासियो के लिए इस्तेमाल होने वाला एक वैधानिक शब्द है ।

मुख्य शब्द – जनजाति, आर्थिक विकास, परिवर्तन, भूमिका।

प्रस्तावना: भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जनजातियों ने अंग्रेजी हुकूमत के अत्याचार के विरुद्ध वर्ष1831में कोल विद्रोह किया था।भारत के आर्थिक विकास मेंप्राचीनकाल से हीआदिवासियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है ।भारत में प्राचीन काल से ही जनजाति समाज जंगलों में अपना जीवन यापन करता रहा है और वनोपज (जैसे मध्यप्रदेश में तेंदूपत्ता को एकत्रित करना) को एकत्रित करता रहा है परंतु धीरे-धीरे अपने आपको यह समाज कृषि कार्य एवं पशुपालन जैसे अन्य कार्यों में भी संलग्न करने लगा, जनजातीय समाज ने बिना किसी भय के सघन वनों में जंगली जानवरों व प्राकृतिक आपदाओं से लड़ते हुए अपने जीवन को संघर्षमय बनाया है जनजाति समाज ने कृषि कार्य के लिए सर्वप्रथम जंगलों को काटकर जलाया, भूमि साफ कर इसे कृषि योग्य बनाया और प्रोत्साहन दिया। विकास की धाराओं में आगे बढ़ते हुए धीरे-धीरे विभिन्न गांवों एवं कस्बों का निर्माण किया।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, June 2023

भारत में जनजातियां वह मानव समुदाय हैं, जो एक अलग निश्चित भू-भाग में निवास करती है। और जिनकी एक अलग संस्कृति अलग रीति रिवाज अलग भाषा होती है। भारत में संपन्न हुई वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में अनुसूचित जनजाति की कुल जनसंख्या 10.43 करोड़ है, जो भारत की कुल जनसंख्या का 8% है जनजाति समाज को देश के आर्थिक विकास में शामिल हो करने के उद्देश्य से केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा कई योजनाएं चलाई जा रही हैं ताकि इस समाज की कठिन जीवन शैली को कुछ हद तक आसान बनाया जा सके।

जनजाति समाज ने वनों के सहारे अपनी संस्कृति को विकसित किया। घने जंगलों में विचरण करते हुए उन्होंने जंगली जानवरों शेर, भालू, सुअर, गेंडे, सर्प, बिच्छु आदि से बचने के लिए आखेट का सहारा लिया। वनों एवं पहाडियों के आन्तरिक भागों में रहते हुए भील समाज शिकार करके अपनी आजीविका चलाता रहा है। भील समाज जंगलों में झूम पद्धति से खेती, पशुपालन, एवं आखेट कर अपने परिवार का पालन पोषण करते रहे हैं।

घने जंगलों में जनजाति समाज को प्रकृति द्वारा, स्वछंद वातावरण, स्वच्छ जल, नदियां, नाले, झरने, पशु पक्षियों का कोलाहल, सीमित तापमान, हरियाली, आर्द्रता, समय पर वर्षा, मिटटी कटाव से रोक, आंधी एंव तूफानों से रक्षा, प्राकृतिक खाद, बाढ़ पर नियंत्रण, वन्य प्राणियों का शिकार व मनोरंजन इत्यादि प्राकृतिक रूप से उपलब्ध कराया जाता रहा है। इसी के चलते जनजाति समाज घने जंगलों में भी बहुत संतोष एवं प्रसन्नता के साथ रहता है। जनजाति समाज आज भी भारतीय संस्कृति का वाहक माना जाता है क्योंकि यह समाज सनातन हिंदू संस्कृति का पूरे अनुशासन के साथ पालन करता पाया जाता है। जनजाति समाज आज भी आधुनिक चमक दमक से अपने आप को बचाए हुए है। इसके विपरीत शहरों में रहने वाला समाज समय समय पर भारतीय परम्पराओं में अपनी सुविधानुसार परिवर्तन करता रहता है।

जनजाति भारत की आदिम जनजातियों में गिनी जाती है व्यवसायिक दृष्टि से इस जाति के अधिकांश लोग उद्योगों में श्रमिक के रूप में कार्य करते हैं जनजाति भारत की वास्तविक स्वदेशी उपज है जिनके उपस्थिति में प्रत्येक व्यक्ति विदेशी हैं यह वह प्राचीन लोग हैं जिन के भौतिक आधार और दावे हजारों वर्ष पुराने हैं वह सबसे पहले यहां आए वास्तव में भारतीय समाज की नींव के पत्थर आदिवासी ही हैं समाज की सबसे असली विरासत भारतीय आदिवासी ही हैं मध्यप्रदेश में बघेलखंड शहडोल जबलपुर रायपुर और मंडला में जनजातियों का निवास है मध्य प्रदेश में जनजातियों का मूल निवास सीधी जिले में अत्यधिक माना जाता है।

शोध के उद्देश्य:-

1. भारत के आर्थिक विकास में जनजाति समुदाय की स्थिति ज्ञात करना |
2. सामाजिक प्रगतिशीता की जानकारी प्राप्त करना |

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, June 2023

3. भारत के आर्थिक विकास में जनजातियों के परिवर्तन के बारे में जानकारी प्राप्त करना |
4. आर्थिक विकास के प्रति चेतना वजागरूकताका अध्ययन करना |
5. आर्थिक विकास में जनजातियों द्वारा परिवर्तन प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करना |

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में रखते हुए निम्न पद्धतियों का उपयोग किया गया है :-

निदर्शन पद्धति –

अध्ययन को स्वरुप देने के लिए उद्देश्य परक निदर्शन के अंतर्गत सीधी शहर का चयन किया गया है। सीधी शहर में रह रहे जनजातियों का चयन निदर्शन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरण–

अध्यन को स्वरुप प्रदान करने के लिए सीधी से प्रश्नावली के माधयम से उनकी राय और विचारों को जानने का प्रयास किये गए है। तथ्य संकलन के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया गया है प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में खुला प्रश्न किया गया जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है।

अनुसूची - कुछ प्रतिभागियों को प्रश्नावली समझने में समस्या होने के कारण उनसे राय और विचार जाने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहां अनुसूची के रूप में भी किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकडों का प्रस्तुतिकरण -

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। जनजाति कीसामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की लोकप्रियता और कार्य पद्धति को केन्द्र में रखकर यह शोध कार्य कियागया है। तथ्यों और आंकड़ों को प्रश्नावली, अनुसूची के माध्यम से एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गयाहै। प्रस्तुत शोध सीधी शहर में रहने वाले जनजाति पर विशेष रूप से केन्द्रित है। अध्ययन में जिनमे विषयसे संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है। तथ्य संकलन हेतु पचास से अधिक प्रश्नावली, अनुसूची को भरवायागया है। लेकिन तथ्य विश्लेषण में पचास प्रतिभागियों के मतो को शामिल किया गया है। तथ्य संकलन काकार्य जुलाई2023 में किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची में कुल 03 प्रश्नो को शामिल किया गया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, June 2023

साक्षात्कार अनुसूची में बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को अध्ययन हेतु केन्द्र में रखा गया है।साक्षात्कार अनुसूची में विकल्प के रूप मे हाँ, नही और पता नही को तथ्य संकलन हेतु आधार बनायागया है। जो इस प्रकार है।

तालिका क्र. 01

1. क्या भारत के विकास के प्रति जनजातियाँ जागरूक हैं?

क्र.	न्यायदर्श का चयन	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	20	40%
2.	नहीं	25	50%
3.	पतानहीं	5	10%
	योग	50	100%

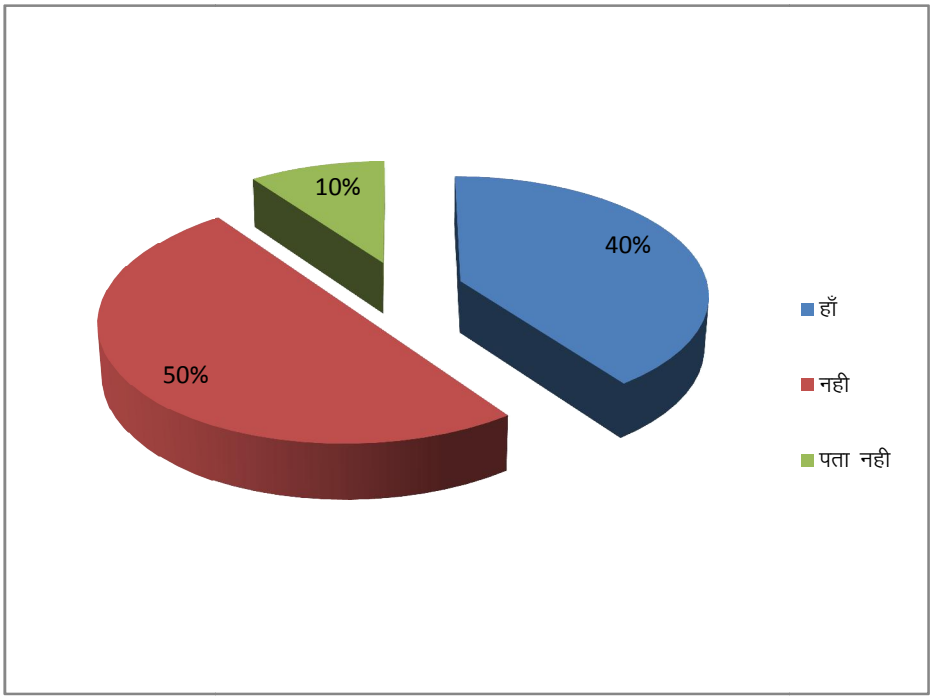

विश्लेषण-

तालिका क्रमांक 1 के आँकड़ोंके अध्ययन से ज्ञात होता है कि जनजाति भारत के आर्थिक विकास प्रतिजागरूक है|कुल 50 उत्तरदाताओं के चुनाव मे से 20 उत्तरदाताओं (40 प्रतिशत) ने कहा है कि जागरूकहै जबकि 25 (50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा जागरूक नही है तथा 05 (10 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा ज्ञात नही है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, June 2023

तालिका क्र. 02

2. क्याजनजाति समुदाय भारत के आर्थिक विकास में योगदान कर रहेहैं?

क्र.	न्यायदर्श का चयन	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	30	60%
2.	नहीं	15	30%
3.	पतानहीं	5	10%
	योग	50	100%

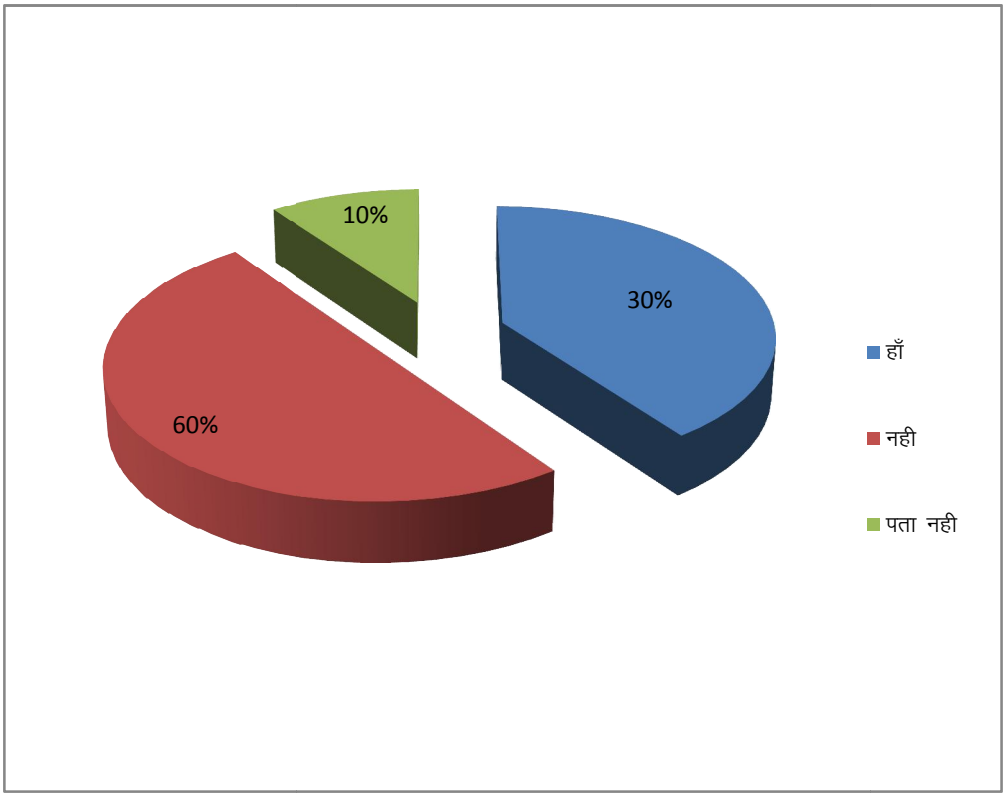

विश्लेषण-

तालिका क्रमांक 2 के आँकड़ोंके अध्ययन से ज्ञात होता है कि जनजाति समुदाय भारत के आर्थिक विकास में योगदान कर रहे हैं|कुल 50 उत्तरदाताओं के चुनाव मे से 30 उत्तरदाताओं (60 प्रतिशत) ने कहा है कि जागरूकहै जबकि 15 (30 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा जागरूक नही है तथा 05 (10 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा ज्ञात नही है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, June 2023

तालिका क्र. 03

3. क्याजनजातियों में आर्थिक विकास के कारण परिवर्तन हो रहेहैं?

क्र.	न्यायदर्श का चयन	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	35	70%
2.	नहीं	10	20%
3.	पतानहीं	5	10%
	योग	50	100%

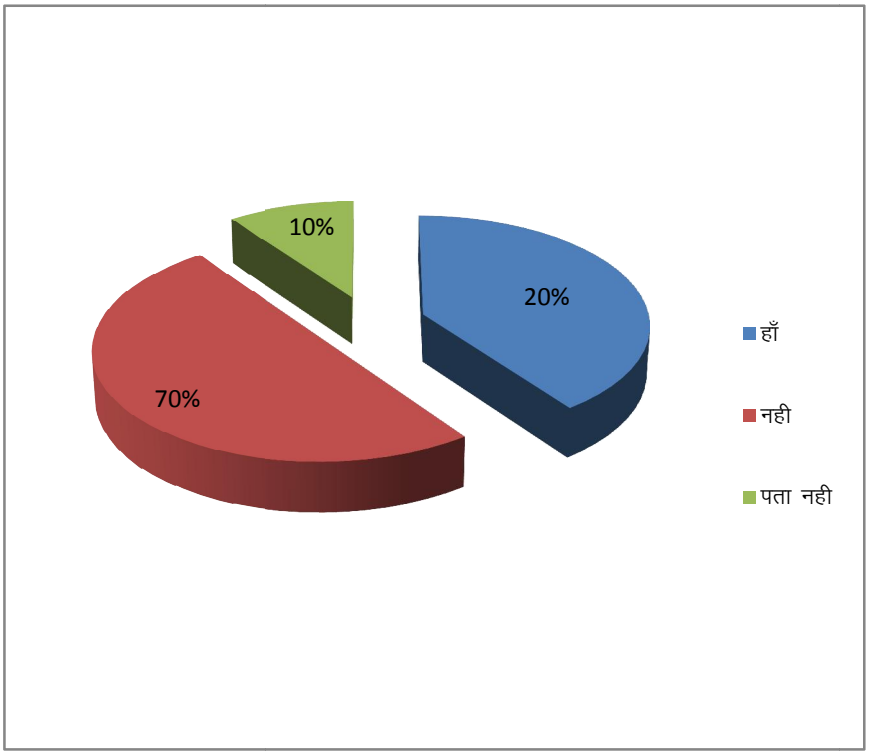

विश्लेषण-

तालिका क्रमांक 3 के आँकड़ोंके अध्ययन से ज्ञात होता है कि जनजातियों में आर्थिक विकास के कारण परिवर्तन हो रहे हैं|कुल 50 उत्तरदाताओं के चुनाव मे से 30 उत्तरदाताओं (60 प्रतिशत) ने कहा है कि जागरूकहै जबकि 15 (30 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा जागरूक नही है तथा 05 (10 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा ज्ञात नही है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, June 2023

शोध निष्कर्ष :-

भारत के आर्थिक विकास में जनजातियों का बहुत योगदान रहा है। भारत की आजादी में जनजातियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बिरसा मुंडा विद्रोह जैसे अनेक विद्रोहो से भारत को आजाद कराने में जनजातियों का विशेष योगदान रहा है।भारत के झारखंड में बिरसा मुंडा को भगवान के रूप में मानते हैं। बिरसा मुंडा की बहुत बड़ी भूमिका रही है अंग्रेजों को भारत से आजाद कराने में वर्ष 2021 से 15 नवंबर को जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाया जाता है।

जनजाति लोगों ने स्वाधीनता संग्राम के दौरान अपनी बहादुरी का परिचय दिया था।भारतीय समाज में जनजातियों की अपनी अलग विशेषता है उनका अपना अलग अलग अस्तित्व है भारतीय जनजातियों का जीवन विश्व के अन्य जातियों की अपेक्षा अलग प्रकार का जीवन है।यह जनजातियां सामुदायिक मात्रा के प्रबल पोषक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. डेविस किंग्सले (1973) मानव समाज किताब महल इलाहाबाद।
2. बघेल डी. एस. (1990) भारतीय सामाजिक समस्याऐं, पुष्पराज प्रकशन रीवा।
3. तिवारी शिव कुमार (1998) म.प्र. के आदिवासी म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
4. ग्रीन ए. डब्ल्यू. सोसियोलॉजी।
5. उव्रेती एज.सी. (1970) भारतीय जनजातियां ओरिएंटल प्रकाशन।
6. एल्विन बी (1939) द बैगा जॉनमुर्रे लन्दन।
7. पटेल जी. पी. (1991) बैगा जनजाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन।